

डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ पच्चीस

भविष्यवाणी के महत्व का अनावरण: दानियेल 11:40 की व्याख्या और आधुनिक ईसाई धर्म के लिए उसके निहितार्थ

Jeff Pippenger

2024-03-09

दानियेल अध्याय ग्यारह का पद चालीस अन्त के समय से आरम्भ होता है, परन्तु यह पद अन्त के समय के दो चरणों की पहचान कराता है, और इस प्रकार भविष्यवाणी के विद्यार्थी को पहले अन्त के समय का दूसरे अन्त के समय के साथ मिलान करने की अनुमति देता है। जब यह लागू किया जाता है, तो 1798 में आरम्भ हुई मिलरवादी इतिहास की रेखा 1989 में संयुक्त राज्य अमेरिका के इतिहास के साथ समानांतर चलती है। ये दोनों रेखाएँ प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह के पृथ्वी से उठने वाले पशु के सच्चे प्रोटेस्टेंट सींग की रेखा और गणतांत्रिक सींग की रेखा की पहचान कराती हैं। दोनों रेखाएँ 1798 के अन्त के समय से आरम्भ होती हैं, और 1989 का अन्त का समय केवल उन सत्य के मार्गचिह्नों का पूरक बनता है तथा दूसरा साक्ष्य प्रदान करता है, जो इस पद में उन्मोचित किए गए हैं।

तीसरे स्वर्गदूत का आंदोलन 22 अक्टूबर, 1844 को आया, परन्तु 1856 से 1863 तक के सात-वर्षीय विद्रोह के कारण वह स्थगित हो गया। तीसरे स्वर्गदूत का आगमन 11 सितंबर, 2001 को पुनः हुआ। 1863 का प्रतीक प्राचीन इस्राएल का कादेश में पहला पड़ाव और दस जासूसों का विद्रोह था, और 11 सितंबर, 2001 का प्रतीक प्राचीन इस्राएल का कादेश में अंतिम पड़ाव और मूसा का विद्रोह था। 1863 का विद्रोह कादेश में पहले विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता था, जिसके परिणामस्वरूप जंगल में मृत्यु का दंडादेश हुआ। 11 सितंबर, 2001 का विद्रोह कादेश में अंतिम विद्रोह का प्रतिनिधित्व करता था, जिसके परिणामस्वरूप लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म के नेतृत्व की मृत्यु हुई।

11 अगस्त, 1840 को स्वर्गदूत का अवतरण, जिसने 1840 से 1844 के आंदोलन का आरंभ कराया, जिसे सिस्टर वाइट ने परमेश्वर की शक्ति के महिमामय प्रगटीकरण के रूप में कहा, 11 सितंबर, 2001 का प्रतिरूप था और परमेश्वर की शक्ति के एक महिमामय प्रगटीकरण की पहचान कराई।

"तीसरे स्वर्गदूत के संदेश की घोषणा में सहभागी होने वाला स्वर्गदूत अपनी महिमा से समूची पृथ्वी को आलोकित करने वाला है। यहाँ विश्व-व्यापी विस्तार और अभूतपूर्व शक्ति के एक कार्य की भविष्यवाणी की गई है। 1840-44 का आगमन आंदोलन परमेश्वर की शक्ति का एक महिमामय प्रगटीकरण था; प्रथम स्वर्गदूत का संदेश संसार के हर मिशनरी केंद्र तक पहुँचाया गया, और कुछ देशों में धार्मिक रुचि का वह सर्वोच्च स्तर देखा गया, जो सोलहवीं शताब्दी के सुधार के बाद से किसी भी देश में देखा गया था; परन्तु तीसरे स्वर्गदूत की अंतिम चेतावनी के अधीन होने वाला शक्तिशाली आंदोलन इन सब से बढ़कर होगा।" महान संघर्ष, 611.

22 अक्टूबर, 1844 (पहला कादेश) को तीसरे स्वर्गदूत का पहला आगमन कार्य को पूरा करने के लिए था, परन्तु परमेश्वर के लोगों ने एक नया नेता चुनकर मिस लौटने का निर्णय लिया। 1863 तक, उन्होंने "यरीहो का पुनर्निर्माण कर लिया था", यरीहो की दीवारों को गिराने में परमेश्वर के कार्य में सहभागी होने के बजाय। इसलिए वे शापित हुए और मरुभूमि में मृत्यु को प्राप्त हुए।

और यहोशू ने उसी समय उन्हें शपथ दिलाकर कहा, "जो कोई प्रभु के सामने उठकर इस नगर यरीहो का निर्माण करे, वह शापित हो; वह उसकी नींव अपने पहिलौठे के मूल्य पर डालेगा, और अपने सबसे छोटे पुत्र के मूल्य पर उसके फाटक स्थापित करेगा।" यहोशू 6:26.

जैसे प्राचीन इस्राएल ने पहले कादेश में, जब उन्होंने यहोशू और कालेब के संदेश को अस्वीकार किया था, वैसा ही आधुनिक इस्राएल की पहले कादेश (1863) में की गई बगावत ने उन पर यहोशू का श्राप ला दिया। जब तीसरा स्वर्गदूत 11 सितम्बर 2001 (अंतिम कादेश) को लौटा, तो ईश्वर द्वारा यरीहो और उसकी दीवारों को गिराने से पहले

का अंतिम कार्य आरंभ हुआ।

22 अक्टूबर, 1844 तीसरे स्वर्गदूत के आगमन को चिह्नित करता है, और इस प्रकार यह अंतिम दिनों में शीघ्र आने वाले रविवार के आगमन को भी चिह्नित करता है। 1863 तीसरे स्वर्गदूत के उस परीक्षण काल के अंत को चिह्नित करता है जो 22 अक्टूबर, 1844 को प्रारंभ हुआ था। इसलिए 1863 शीघ्र आने वाले रविवार के कानून का प्रतीक है, क्योंकि यीशु सदैव अंत को शुरुआत के साथ दर्शाते हैं। 1863 में राष्ट्र दो वर्गों में विभाजित हो गया था, और उसी प्रकार, रविवार के कानून के समय भी दो वर्ग प्रकट होंगे।

मिलराइट इतिहास में तीसरे स्वर्गदूत का परीक्षण काल 1844 में प्रारंभ हुआ और 1863 में समाप्त हुआ, और इसकी शुरुआत तथा समाप्ति—दोनों—अंतिम दिनों के रविवार के कानून को चिह्नित करती थीं। शुरुआत (1844) और समाप्ति (1863) के बीच की अवधि में मिलराइट आंदोलन का विद्रोह (1856) है। इस प्रकार, यह काल 'सत्य' की मुहर लिए हुए है। 11 सितंबर, 2001 को दूसरी बार कादेश की ओर लौटना तीसरे स्वर्गदूत की परीक्षण प्रक्रिया की शुरुआत को चिह्नित करता है, जो शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर समाप्त होती है, जिसका प्रतिरूप 1863 था।

उस रविवार के कानून से लेकर मानवीय अनुग्रह-काल के बंद होने तक, यरीहो और उसकी दीवारें गिरा दी जाएंगी, उस इतिहास में दर्शाई गई बाबिलोन की वेश्या पर न्याय के क्रियान्वयन के अनुरूप। चालीसवाँ पद 1798 से आरंभ होता है, और इकतालीसवें पद में शीघ्र आने वाले रविवार के कानून पर आकर समाप्त होता है। 1798 में अंत का समय परमेश्वर की कलीसिया की आंतरिक रेखा का प्रतिनिधित्व करता है, जो पहले स्वर्गदूत के आंदोलन के मिलेराइट्स से शुरू होकर तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन और एक लाख चवालीस हज़ार तक पहुँचता है। यह सब एक ही पद में।

उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के बीच का युद्ध, जो 1798 में दक्षिण के राजा के उत्कर्ष के साथ शुरू हुआ था, 1989 में निष्कर्ष पर पहुँचा, जब दक्षिण के राजा को बाइबल की भविष्यवाणी के पाँचवें और छठे राज्यों के बीच के गठबंधन ने परास्त कर दिया। 1798 में शुरू हुए उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के इस युद्ध को मिलेराइटों ने रोम के विरुद्ध एक युद्ध के रूप में पहचाना, जिसे वे मात्र पैगनवाद और पोपवाद की दो उजाड़ने वाली शक्तियों के रूप में देखते थे। जब यह युद्ध 1989 में समाप्त हुआ, तब तीनों उजाड़ने वाली शक्तियाँ शामिल थीं, और यह उन तीन शक्तियों द्वारा संसार को आर्मगेडन तक ले जाने के भविष्यसूचक चित्रण की शुरुआत का चिन्ह बना, जिसका भौगोलिक निरूपण दानिय्येल अध्याय 11 के पद 45 में है।

चालीस से पैंतालीस तक के पद उन तीन शक्तियों की भविष्यसूचक गतिशीलताओं को चिह्नित करते हैं, जो पोप को समुद्रों और महिमामय पवित्र पर्वत के बीच उसके अंत तक पहुँचा देती हैं। सही रूप में समझने पर, इकतालीसवें पद में प्रस्तुत भविष्यसूचक इतिहास, इकतालीस से चवालीस तक के पदों को समेटता है।

इसलिए, 1989 में अंत के समय से आरम्भ करते हुए, और 1798 के दूसरे साक्ष्य के साथ, जो दक्षिण के राजा और उत्तर के राजा के बीच के युद्ध की शुरुआत और समाप्ति को चिह्नित करते हैं, पद 41 से 44 उस पापाई सत्ता के त्रि-गुना गठबंधन को चिह्नित करते हैं जिसका घातक घाव चंगा हो गया है, और पद 45 वह है जहाँ वह अपने अंत पर पहुँचती है। इन पदों को जब इस दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो वे परमेश्वर की कलीसिया के बाहर का इतिहास प्रस्तुत करते हैं, जैसा कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में सात मुहरों और सात कलीसियाओं के बीच के संबंध द्वारा भी दर्शाया गया है।

1798 द्वारा दर्शाई गई भविष्यवाणी-इतिहास की रेखा मुख्यतः जाँच-पड़ताल के न्याय का प्रतिनिधित्व करती है, और 1989 में उसी बिंदु से आरंभ होने वाली रेखा मुख्यतः न्याय-निष्पादन का प्रतिनिधित्व करती है। 1798 मुख्यतः उस दूत के कार्य पर जोर देता है जो वाचा के दूत के लिए मार्ग तैयार करता है, और 1989 मुख्यतः एलिय्याह दूत के कार्य पर जोर देता है।

1798 से, जब दानिय्येल की पुस्तक की मुहर खोली गई, तब से भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास के ज्ञान में वृद्धि हुई है, जिसमें मसीह अपनी प्रजा को ऐसे वाचा-संबंध में ले जाते हैं जो दिव्यता और मानवता के स्थायी संयोग को पूरा करता है। वह अंतिम दिनों की वाचा पवित्र शास्त्रों में बार-बार वर्णित है।

देखो, वे दिन आते हैं, यहोवा की यह वाणी है, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ नई वाचा बाँधूँगा— उस वाचा के समान नहीं जो मैंने उनके पितरों से उस दिन बाँधी थी, जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया था; उस वाचा को उन्होंने तोड़ा, यद्यपि मैं उनका पति था, यहोवा की यह वाणी है। परन्तु यह वह वाचा होगी जो मैं इस्राएल के घराने के साथ बाँधूँगा: उन दिनों के बाद, यहोवा की यह वाणी है, मैं अपनी व्यवस्था उनके भीतर रखूँगा, और उसे उनके हृदयों पर लिखूँगा; और मैं उनका परमेश्वर रहूँगा, और वे मेरी प्रजा होंगे। और वे अब अपने-अपने पड़ोसी को और अपने-अपने भाई को यह कहकर शिक्षा न देंगे, 'यहोवा को जानो'; क्योंकि छोटों से लेकर बड़ों तक सब मुझे जानेंगे, यहोवा की यह वाणी है; क्योंकि मैं उनकी अधर्मता क्षमा करूँगा, और उनके पापों को फिर स्मरण न करूँगा। यिर्मयाह 31:31-34.

सभी भविष्यद्वक्ता "अंतिम दिनों" की ओर संकेत करते हैं, और भविष्यवाणी में "अंतिम दिनों" का वाक्यांश न्याय की समयावधि का प्रतिनिधित्व करता है। पहला स्वर्गदूत 1798 में, अंत का समय आने पर, 1844 में न्याय के उद्घाटन की घोषणा करने के लिए आया, जो "अंतिम दिनों" के आगमन का भी संकेत है। "अंतिम दिन" यिर्मयाह के वे "दिन" हैं जो आएंगे, जब परमेश्वर अपने लोगों की "अधर्मता" को "क्षमा" करेंगे और उनके पापों को "फिर स्मरण" नहीं करेंगे। यह कार्य मसीह द्वारा, महायाजक के रूप में, प्रतिरूपात्मक प्रायश्चित्त-दिवस में, "अंतिम दिनों" के दौरान संपन्न किया जाता है।

यदि मिलेराइट एडवेंटवादियों ने 22 अक्टूबर, 1844 को आए तीसरे स्वर्गदूत के आगे बढ़ते प्रकाश में विश्वास से चलते रहना जारी रखा होता, तो वे अब तक यीशु के साथ अपने अनन्त घर में होते। यही यिर्मयाह का अर्थ है जब वह कहता है, "उन दिनों के बाद।" "वे दिन" वे भविष्यवाणी संबंधी अवधियाँ हैं जो 1844 तक ले गईं और 1844 में ही समाप्त हुईं। वे वही "दिन" हैं जिनका उल्लेख दानिय्येल के बारहवें अध्याय में है।

परन्तु तू अपने मार्ग पर अन्त तक चलता जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा, और दिनों के अन्त में अपने ठहराए हुए हिस्से में खड़ा होगा। दानिय्येल 12:13.

"दिनों के अंत" में, या जैसा कि यिर्मयाह कहता है, "उन दिनों के बाद," मसीह ने अपनी प्रजा के अंतरंग भागों में अपनी व्यवस्था रखना और उनके हृदयों पर अपनी व्यवस्था लिखना ठहराया। अंतरंग भाग निम्न प्रकृति हैं—और जैसा कि पौलुस उसे "देह" कहता है—और हृदय उच्च प्रकृति है। वाचा यह प्रतिज्ञा करती है कि परिवर्तन के समय वह अपनी प्रजा को नया मन देगी, और दूसरे आगमन पर नया शरीर। मनुष्यजाति आदम में पतित हो गई, जो परमेश्वर की प्रतिमा में रचा गया था, और जो उच्च तथा निम्न प्रकृति के साथ रचा गया था। मसीह की वाचा का उद्देश्य मनुष्यजाति को उसके इस द्वि-स्वभाव सहित पाप के शाप से छुड़ाना है।

इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में, परमेश्वर की अपनी आज्ञाएँ मानने वाली प्रजा के साथ की वाचा का नवीकरण होगा। "उस दिन मैं उनके लिये मैदान के पशुओं, आकाश के पक्षियों और भूमि पर रेंगने वाले जीवों के साथ एक वाचा करूँगा; और मैं पृथ्वी से धनुष, तलवार और युद्ध को समाप्त कर दूँगा, और उन्हें निश्चिंत होकर चैन से लेटने दूँगा। और मैं तुझे सदा के लिये अपने से ब्याह दूँगा; हाँ, मैं तुझे धर्म और न्याय, और प्रेम-करुणा और दया के साथ अपने से ब्याह दूँगा। मैं तुझे विश्वासयोग्यता में भी अपने से ब्याह दूँगा; और तू प्रभु को जान लेगी।"

'और उस दिन यह होगा कि मैं सुनूँगा, प्रभु कहता है, मैं स्वर्गों को सुनूँगा, और वे पृथ्वी को सुनेंगे; और पृथ्वी अन्न, दाखरस और तेल को सुनेगी; और वे यिज्जेल को सुनेंगे। और मैं उसे अपने लिए पृथ्वी में बोऊँगा; और मैं उस पर दया करूँगा जिस ने दया नहीं पाई थी; और मैं उनसे कहूँगा जो मेरे लोग न थे, तुम मेरे लोग हो; और वे कहेंगे, तू मेरा परमेश्वर है।' होशे 2:14-23.

'उस दिन, . . . इस्राएल के बचे हुए लोग, और याकूब के घराने में से जो बच निकले हैं, . . . प्रभु, इस्राएल के पवित्र, पर सत्य में निर्भर रहेंगे।' यशायाह 10:20। 'हर एक जाति, कुल, भाषा और लोगों' में से ऐसे लोग होंगे जो इस संदेश का सहर्ष प्रत्युत्तर देंगे, 'परमेश्वर का भय मानो, और उसे महिमा दो; क्योंकि उसके न्याय का समय आ पहुँचा है।' वे हर उस मूर्ति से, जो उन्हें इस पृथ्वी से बाँधती है, फिर जाएँगे, और 'उसी की आराधना करेंगे जिसने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जल के सोते बनाए हैं।' वे अपने आप को हर बंधन से मुक्त करेंगे, और संसार के सामने परमेश्वर की दया के स्मारक बनकर खड़े होंगे। हर दिव्य आज्ञा के प्रति आज्ञाकारी होकर, वे स्वर्गदूतों और मनुष्यों द्वारा ऐसे पहचाने जाएँगे जो 'परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, और यीशु के विश्वास को थामे रहते हैं।' प्रकाशितवाक्य 14:6-7, 12।

'देखो, वे दिन आते हैं, यहीवा कहता है, कि हल चलाने वाला लवनी करने वाले को पकड़ लेगा, और अंगूर रौंदने वाला बीज बोने वाले को; और पहाड़ों से मीठी दाखमधु टपकेगी, और सब पहाड़ियाँ पिघल जाएँगी। और मैं अपने इस्राएल के लोगों की बंदी दशा को फिर पलट दूँगा, और वे उजड़े हुए नगरों को फिर बनाएँगे और उनमें बसेंगे; और वे दाख की बारियाँ लगाएँगे, और उनका दाखमधु पियेंगे; वे बाग भी बनाएँगे, और उनका फल खाएँगे। और मैं उन्हें उनकी भूमि में रोप दूँगा, और जिस भूमि को मैंने उन्हें दी है, उससे वे फिर कभी उखाड़े न जाएँगे, यहीवा तेरा परमेश्वर कहता है। आमोस 9:13-15।' रिव्यू एंड हेराल्ड, 26 फ़रवरी, 1914.

जब यिर्मयाह "उन दिनों के बाद" कहता है, तो वे "दिन"—जो उस कार्य से पहले थे, जिसका प्रतिनिधित्व मसीह के अपने मंदिर में उसे शुद्ध करने के लिए अचानक आने से होता है—1798 और 1844 में समाप्त होने वाले भविष्यवाणी के कालखंड थे। उन भविष्यवाणी के दिनों (कालखंडों) का अंत उन छियालीस वर्षों को चिह्नित करता है, जिनमें मसीह ने मिलेराइट मंदिर का निर्माण किया, और जब वे 22 अक्टूबर, 1844 को अचानक आए, तब वे मलाकी अध्याय तीन की पूर्ति कर रहे थे, जिसकी पूर्ति उन्होंने अपनी सेवा के आरंभ और अंत में मंदिर को शुद्ध करते समय भी की।

जब यीशु ने मंदिर को संसार के खरीदारों और विक्रेताओं से शुद्ध किया, तब उन्होंने यह घोषित किया कि उनका उद्देश्य हृदय को पाप की अशुद्धि से—सांसारिक इच्छाओं, स्वार्थी वासनाओं और बुरी आदतों से, जो आत्मा को भ्रष्ट करती हैं—शुद्ध करना है। मलाकी 3:1-3 उद्धृत। *The Desire of Ages*, 161.

और "उन दिनों के बाद," मसीह का इरादा था कि वह उस मंदिर को शुद्ध करे जिसे उन्होंने स्थापित किया था, जो उनके उस कार्य का प्रतीक था—अपने लोगों के हृदयों को पाप की अशुद्धता से शुद्ध करना; या जैसा कि यिर्मयाह कहता है, उनके हृदयों और अन्तःकरणों पर अपनी व्यवस्था लिखना।

क्योंकि उनमें दोष पाकर वह कहता है: 'देखो, वे दिन आते हैं, प्रभु कहता है, जब मैं इस्राएल के घराने और यहूदा के घराने के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा, उस वाचा के अनुसार नहीं जो मैंने उनके पितरों के साथ उस दिन बाँधी थी, जब मैंने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से बाहर निकाला था; क्योंकि वे मेरी वाचा पर स्थिर न रहे, और मैंने भी उनकी ओर ध्यान नहीं दिया, प्रभु कहता है। क्योंकि यह वह वाचा है जो उन दिनों के बाद मैं इस्राएल के घराने के साथ बाँधूँगा, प्रभु कहता है: मैं अपनी व्यवस्थाएँ उनके मन में डालूँगा और उन्हें उनके हृदयों पर लिखूँगा; और मैं उनके लिए परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे।' इब्रानियों 8:8-10.

"those days" वाक्यांश दानिय्येल के "दिनों का अंत" को संदर्भित करता था, जिसकी समाप्ति 1798 और 1844 में हुई। दानिय्येल अध्याय ग्यारह के चालीसवें पद में, 1798 में आरंभ होने वाली प्रोटेस्टेंट सींग की रेखा, उस वाचा संबंध पर बल देती है जो एक लाख चवालीस हजार के साथ स्थापित किया जाता है। इब्रानी शब्द "lot" एक छोटा पत्थर है, जिसका उपयोग किसी के भाग्य का निर्धारण करने के लिए किया जाता था। दानिय्येल से कहा गया कि वह जाकर विश्राम करे (मृत्यु में), जब तक "दिनों का अंत" न आ जाए; तब, 1844 में, न्याय आरंभ होगा और उसका भाग्य निर्धारित किया जाएगा।

परन्तु तू अपने मार्ग पर अन्त तक चलता जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा, और दिनों के अन्त में अपने ठहराए हुए हिस्से में खड़ा होगा। दानिय्येल 12:13.

"दिनों के अंत" के "दिन" उन समय-संबंधी भविष्यवाणियों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो 1844 में समाप्त हुईं, क्योंकि उसके बाद भविष्यसूचक समय अब और नहीं रहेगा। तेईस सौ वर्ष, जो "मराह" दर्शन था—अर्थात् मसीह का अपने पवित्रस्थान में अचानक प्रकट होना—तब समाप्त हुए, और अंतिम कोप के पच्चीस सौ बीस वर्ष भी समाप्त हो गए, जैसे पहले कोप के "दिन" 1798 में "अंत के समय" पर समाप्त हो गए थे। "उन दिनों के बाद," जैसा कि यरमियाह ने कहा है, की बात बाद में पौलुस ने उठाई। पौलुस यरमियाह के "उन दिनों के बाद" का दो बार उल्लेख करता है, क्योंकि वह केवल उस वाचा की चर्चा नहीं करता जो "उन दिनों के बाद" स्थापित की जानी थी, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण यह है कि वह महायाजक के रूप में मसीह के कार्य की पहचान कर रहा है।

क्योंकि एक ही बलिदान के द्वारा उसने पवित्र किए जा रहे लोगों को सदा के लिए सिद्ध कर दिया है। और इसका साक्षी हमारे लिए पवित्र आत्मा भी है; क्योंकि उसने पहले कहा था, 'यह वह वाचा है जो उन दिनों के बाद मैं उनसे करूंगा,' प्रभु कहता है, 'मैं अपनी व्यवस्थाएँ उनके हृदयों में रखूंगा, और उनके मनो पर उन्हें लिखूंगा; और उनके पापों और अधर्मताओं को मैं फिर कभी स्मरण न करूंगा।' और जहाँ इनका क्षमा हो चुका है, वहाँ पाप के लिए फिर कोई बलिदान नहीं रहता। इसलिए, हे भाइयो, जब हमें यीशु के लहू के द्वारा परम-पवित्र स्थान में प्रवेश करने का साहस प्राप्त है, एक नये और जीवते मार्ग से, जिसे उसने हमारे लिए उस परदे अर्थात् अपने शरीर के द्वारा उद्घाटित किया है; और जब हमारे पास परमेश्वर के घर का महान याजक है। इब्रानियों 10:14-21.

वे दो सौ बीस वर्ष, जो मसीह के प्रकट होने के 'माराह' दर्शन की भविष्यवाणी को भविष्यवाणी के इतिहास के 'खाज़ोन' दर्शन की दो हजार पाँच सौ बीस वर्ष की भविष्यवाणी से जोड़ते हैं, उन दोनों भविष्यसूचक अवधियों की शुरुआत को एक प्रतीकात्मक कड़ी के माध्यम से आपस में बाँधते हैं, जो मानवता और दिव्यता के संयोग का प्रतिनिधित्व करती है; यह वही कार्य है जिसे मसीह तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन के दौरान होने वाले शुद्धिकरण में पूरा करते हैं, और जिसका परिणाम वह वाचा है जो मसीह एक लाख चवालीस हजार के साथ करते हैं।

मंदिर के पददलन को चित्रित करने वाला chazon का दर्शन, मानवता का वह दर्शन है जो अदन की वाटिका में आदम के विद्रोह के समय से पाप द्वारा पददलित होती आई है; और marah का वह दर्शन, जो मंदिर को पुनर्स्थापित करने और शुद्ध करने के मसीह के कार्य को चित्रित करता है—इन दोनों की पूर्ति 22 अक्टूबर, 1844 को हुई। परमेश्वर के रोष की 2520-वर्षीय दो भविष्यवाणियाँ हैं, जो सेना और पवित्रस्थान के पददलन का प्रतिनिधित्व करती हैं।

उन दोनों भविष्यवाणियाँ मानवता के रौंदे जाने का प्रतिनिधित्व करती हैं, जिसे मराह के दर्शन द्वारा पुनःस्थापित किया जाना है। परमेश्वर के अपने लोगों के विरुद्ध प्रकट हुए वे दो प्रकोप पतित मानवजाति पर होने वाले क्रोध का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे केवल मसीह के कार्य—गिरे हुए मंदिर का पुनर्निर्माण और शुद्धिकरण—द्वारा ही बचाया और पुनर्स्थापित किया जाएगा।

दो आक्रोश मानवजाति की उच्च प्रकृति और निम्न प्रकृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। आदम के पतन के समय, निम्न प्रकृति ने उच्च प्रकृति पर सर्वोच्चता प्राप्त कर ली, और मसीह की मनुष्यों के लिए योजना यह थी कि उच्च प्रकृति निम्न प्रकृति पर शासन करे। आदम के पतन के समय, उच्च प्रकृति निम्न प्रकृति की वासनाओं के अधीन गिर गई, और परमेश्वर की योजना उलट गई। बाइबिलीय "परिवर्तन" का यही अर्थ है। परिवर्तित होने का अर्थ है कि उच्च प्रकृति को निम्न प्रकृति पर अपने शासकीय स्थान पर पुनर्स्थापित किया जाए। परिवर्तन का अर्थ है उलट देना, या उल्टा कर देना।

उत्तरी राज्य के विरुद्ध पहला क्षोभ, उस निम्न प्रकृति के विरुद्ध क्षोभ था जिसने पतन के समय उच्च प्रकृति को अधीन कर लिया था। वह क्षोभ सबसे पहले इसलिए आया कि मसीह ने उद्धार का कार्य ठीक वहीं से हाथ में लिया जहाँ से वह आरंभ हुआ था, और वह आरंभ हुआ था निम्न प्रकृति की वासना से, जो क्षुधा की वासना थी। मसीह ने

अपने कार्य की शुरुआत चालीस दिनों के उपवास से की।

मसीह जानते थे कि उद्धार की योजना को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए उन्हें मनुष्य के उद्धार का कार्य वहीं से आरंभ करना होगा जहाँ विनाश शुरू हुआ था। आदम भोजन-लालसा की तुष्टि के कारण गिर पड़ा। परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने के अपने दायित्व को मनुष्य के हृदय पर अंकित करने के लिए, मसीह ने अपने उद्धार के कार्य की शुरुआत मनुष्य की शारीरिक आदतों में सुधार करके की। सदाचार में पतन और मानवजाति का अधःपतन मुख्यतः विकृत भोजन-लालसा की तुष्टि के कारण है। टेस्टिमोनीज़, खंड 3, 486.

दूसरा रोष उच्चतर प्रकृति के विरुद्ध था, जिसका प्रतिनिधित्व दक्षिणी राज्य करता था, जहाँ यरूशलेम स्थित है, जो वह नगर है जिसे परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिए चुना था। 22 अक्टूबर, 1844 को मसीह ने जो कार्य करने का इरादा किया था, और जो कार्य वह अब कर रहे हैं, उसका प्रतिनिधित्व यहजेकेल की दो लाठियों से किया गया है।

जब यहजेकेल की दो लाठियाँ सदैव के लिए एक लाठी में जोड़ दी जाती हैं, तो यह उस वाचा की ओर संकेत करता है जिसमें मसीह अपने लोगों से पाप को सदा के लिए दूर कर देता है, और उच्च तथा निम्न स्वभाव पुनः उचित श्रेणीबद्ध संरचना में स्थापित हो जाते हैं, और मनुष्य फिर से संपूर्ण हो जाते हैं। अपरिवर्तित अवस्था में, मनुष्य का निम्न स्वभाव, जिसका प्रतिनिधित्व प्रथम कोप करता है, मनुष्य के उच्च स्वभाव पर शासन करता था, जिसका प्रतिनिधित्व अंतिम कोप करता है। इस प्रकार, प्रथम कोप उत्तरी राज्य के विरुद्ध था, जो भौगोलिक रूप से दक्षिणी राज्य के 'ऊपर' था।

वे दो सौ बीस वर्ष, जो marah और chazon की दो दृष्टियों को देवत्व और मानवता के साथ उनके परस्पर आरंभ में जोड़ते हैं, दोनों एक लाठी में एक हो जाते हैं, जब मसीह एक लाख चवालीस हजार के साथ तीसरे स्वर्गदूत के कार्य को अंतिम रूप देता है। यह दक्षिणी राज्य के विरुद्ध अंतिम क्रोध की भविष्यवाणी है, जो 1844 में प्रकट होने की भविष्यवाणी के साथ जुड़ी हुई है, क्योंकि वाचा परिवर्तन के समय एक नया मन प्रदान करती है, परंतु नया शरीर (उत्तरी राज्य) केवल दूसरे आगमन के समय पलक झपकते ही पुनर्स्थापित होता है।

दानियेल अध्याय ग्यारह के पद चालीस में दोनों 'अंत के समयों' की पहचान की गई है, और ऐसा करते हुए वह प्रकाशितवाक्य अध्याय तेरह में पृथ्वी से निकलने वाले पशु के इतिहास के दौरान भविष्यवाणी के इतिहास की एक आंतरिक और एक बाहरी रेखा पर बल देता है। उस पद में जिन सत्यों की मुहर खोली जाती है, वे उन आंतरिक और बाहरी सत्य-रेखाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें मसीह अपने लोगों के भीतर पहचानने और पूर्ण करने आए थे। यह सत्य कि मनुष्यता, जब दिव्यता के साथ संयुक्त होती है, पाप नहीं करती—यह उस ज्योति में प्रकट किया गया है जो ज्ञान की मुहर खुलने के प्रभाव से संबद्ध है, और यह अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों के आंतरिक सत्य का प्रतिनिधित्व करता है। जो शक्तियाँ संसार को हरमगिदोन तक ले जाती हैं, उनके बीच के युद्ध द्वारा प्रकट की गई ज्योति अंतिम दिनों में परमेश्वर के लोगों के बाहरी सत्य को दर्शाती है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

यहोवा का वचन फिर मेरे पास आया, और कहा, हे मनुष्य के पुत्र, अपने लिए एक छड़ी ले, और उस पर यह लिख: यहूदा के लिए, और उसके साथी इस्राएल की सन्तानों के लिए। फिर दूसरी छड़ी ले, और उस पर यह लिख: यूसुफ के लिए—अर्थात् एप्रैम की छड़ी—और उसके साथी इस्राएल के सारे घराने के लिए। और उन दोनों को आपस में जोड़कर एक ही छड़ी बना; और वे तेरे हाथ में एक हो जाएँगी। और जब तेरी प्रजा के लोग तुझ से कहें, “क्या तू हमें नहीं बताएगा कि इनका क्या अर्थ है?” तब उनसे कहना, प्रभु यहोवा यों कहता है: देख, मैं यूसुफ की वह छड़ी—जो एप्रैम के हाथ में है—और उसके साथी इस्राएल की जातियों को लेकर, उन्हें यहूदा की छड़ी के साथ, अर्थात् उसके साथ, रखूँगा, और उन्हें एक ही छड़ी बना दूँगा; और वे मेरे हाथ में एक होंगी। और जिन छड़ियों पर तू लिखेगा, वे उनकी आँखों के सामने तेरे हाथ में रहेंगी। और उनसे कहना, प्रभु यहोवा यों कहता है: देख, मैं इस्राएल की सन्तानों को उन जातियों में से, जहाँ वे गए हैं, निकाल लूँगा; और उन्हें चारों ओर से इकट्ठा करूँगा, और उन्हें उनके अपने देश में ले आऊँगा। और इस्राएल के पहाड़ों पर उस देश में मैं उन्हें एक जाति

बनाऊँगा; और एक राजा उन सब पर राजा होगा। वे फिर दो जातियाँ न रहेंगे, और न फिर कभी दो राज्यों में बँटेंगे। वे न तो अपनी मूर्तियों से, न अपनी घृणित वस्तुओं से, और न अपने किसी भी अपराध से फिर अपने आप को अशुद्ध करेंगे; परन्तु मैं उन्हें उनके सब निवास-स्थानों में से, जहाँ उन्होंने पाप किया है, छुड़ा लूँगा, और उन्हें शुद्ध कर दूँगा; तब वे मेरी प्रजा होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा। और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा; और उन सबका एक ही चरवाहा होगा। वे मेरे निर्णयों पर चलेंगे, और मेरी विधियों को मानेंगे और उनका पालन करेंगे। और वे उस देश में बसेंगे जो मैंने अपने दास याकूब को दिया था, जहाँ तुम्हारे पितृ बसते थे; और वे—वे स्वयं, उनके बच्चे, और उनके बच्चों के बच्चे—सदा तक वहाँ बसेंगे; और मेरा दास दाऊद सदा सर्वदा उनका प्रधान रहेगा। फिर मैं उनके साथ मेल की वाचा बाँधूँगा; वह उनके साथ सदा की वाचा होगी; और मैं उन्हें स्थिर करूँगा और बढ़ाऊँगा, और अपना पवित्रस्थान उनके बीच सदा के लिए स्थापित करूँगा। मेरा निवास-स्थान भी उनके साथ होगा; हाँ, मैं उनका परमेश्वर रहूँगा, और वे मेरी प्रजा रहेंगे। और जब मेरा पवित्रस्थान सदैव के लिए उनके बीच होगा, तब जातियाँ जान लेंगी कि मैं, यहोवा, इस्राएल को पवित्र ठहराता हूँ। यहजकेल 37:15-28.